ॐ गं गणपतये नमः

नरसिंह कवच

Click on ⛶ for full screen reading

नृसिंहकवचं वक्ष्ये प्रह्लादेनोदितं पुरा।
सर्वरक्षाकरं पुण्यं सर्वोपद्रवनाशनम्॥

नृसिंहकवचं ((मैं) नृसिंह कवच का) **वक्ष्ये** (वर्णन करूँगा) **प्रह्लादेनोदितं** – **प्रह्लादेन** ((जिसे) श्री प्रह्लाद ने) + **उदितं** (कहा | रचा) **पुरा** (बहुत पहले | पुरातन काल में) =(I will now recite) The Narasimha Kavach (i.e. armor) (which) has been composed by Shri Prahlad way back in the past.

सर्व + रक्षा + करं + पुण्यं – ((यह कवच) हर तरह से रक्षा करता है (और) पुण्य प्रदान करता है) = (The Kavach) has the ability to protect us in all possible ways. It also enhances our good deeds | good Karma.

सर्वोपद्रवनाशनम् – **सर्व** (सारे) + **उपद्रव** (उपद्रवों (परेशानियों) का) **नाशनम्** (नाश करने वाला) = It eliminates all disturbances | negativities.

भावार्थ – यह श्लोक कवच की शक्ति और क्षमताओं का वर्णन करता है। साथ ही, चूँकि यह प्रथम श्लोक है, यह इसके उद्गम और रचनाकार का भी परिचय देता है। इसके रचनाकार राजकुमार प्रह्लाद हैं – वे परम भक्त जिनकी अटूट भक्ति नृसिंह अवतार का माध्यम बनी।

Interpretation – This verse describes the strength and capabilities of the Kavach (Armor). Also, since it is the first verse, it also gives the origin and the composer of the Kavach. The composer is Prince Prahlaad – the ultimate disciple whose faith became the medium for Lord Vishnu incarnating as Lord Narasimha.

सर्वसम्पत्करं चैव स्वर्गमोक्षप्रदायकम्।
ध्यात्वा नृसिंहं देवेशं हेमसिंहासनस्थितम्॥

सर्वसम्पत्करं - सर्व + सम्पत् ((यह कवच हर तरह की) संपत्ति) + **करं** (देता है) + **चैव** - **च** + **एव** (और यह)... = (This Kavach) enables appropriation of all kinds of wealth, and this...

स्वर्गमोक्षप्रदायकम् – ...**स्वर्ग** + **मोक्ष** + **प्रदायकम्** (स्वर्ग और मोक्ष भी प्रदान करता है) = ...also bestows heaven and final liberation(Nirvana).

ध्यात्वा ((संपत्ति, स्वर्ग तथा मोक्ष मिलते हैं जब) ध्यान किया जाए) **नृसिंहं देवेशं** – (देवों के ईश्वर नरसिंह देव का) = (Wealth, Heaven & Nirvana are bestowed when) Lord of the Deities, Lord Narasimha, is meditated upon.

हेमसिंहासनस्थितम् – **हेम** (स्वर्ण) + **सिंहासन** + **स्थितम्** – ((उनका ध्यान उस रूप में किया जाए जिसमें) वे स्वर्ण के बने सिंहासन पर विराजमान हैं) = (And He should be meditated upon in the form where) He is seated on a Golden Throne.

भावार्थ – यह श्लोक हमें कवच पढ़ने के लिए तैयार कर रहा है, और नरसिंह देव का ध्यान करना पहला चरण है। आप देखेंगे, तकनीकी रूप से कवच की शुरुआत सातवें श्लोक से होती है। पहले छः श्लोक हमें सही मानसिक अवस्था में लाने के लिए हैं।

यह प्रक्रिया इस द्वितीय श्लोक से और अधिक स्पष्ट हो रही है। इसमें एक ओर कवच को धारण करने के लाभ (संपत्ति, स्वर्ग, और मोक्ष) बताए गए हैं। दूसरी ओर यह भी कहा गया है कि इन फलों को प्राप्त करने के लिए पहले नरसिंह भगवान का ध्यान करना आवश्यक है, उन्हें उस रूप में देखते हुए जहाँ वे जो स्वर्ण सिंहासन पर राजसी रूप में विराजमान हैं।

Interpretation – This verse is preparing us for reading the Kavach, and meditating on Lord Narasimha is the first step. As you will see, technically, the Kavach starts from the 7th verse. The first 6 verses are aimed at getting us in the right frame of mind.

This intention is highlighted by this 2nd stanza. In this, on one hand, the benefits of imbibing the Kavach are described (Prosperity, Heaven, Final Liberation). On the other hand, it is also said that to get these, we must first meditate on Lord Narasimha, visualizing Him sitting royally on a Golden Throne.

विवृतास्यं त्रिनयनं शरदिन्दुसमप्रभम्।
लक्ष्म्यालिङ्गितवामाङ्गं विभूतिभिरुपाश्रितम्॥

विवृतास्यम् - विवृत ((सिंह की तरह) खुला हुआ) + **आस्यम्** ((उनका) मुख है) **त्रिनयनम् – त्रि** ((उनके) तीन) + **नयनम्** (नेत्र हैं) = His Mouth is Open (Like a Lion). He has Three Eyes.

शरदिन्दुसमप्रभम् – शरद (ऋतु) + **इन्दु (** (के) चन्द्रमा) + **सम** (जैसी) + **प्रभम्** ((शीतल) चमक (लिये उनका चेहरा है)) = His face is radiant with a bright yet soft light, like the Autumn Moon.

लक्ष्म्यालिङ्गितवामाङ्गम् - लक्ष्मी + आलिङ्गित (के द्वारा आलिंगित अर्थात् पास लिए हुए | गले लगाए हुए) + **वाम** (बायां) + **अङ्गम्** - माँ लक्ष्मी ने उन्हें बायीं तरफ से पास लिया हुआ है | गले लगाया हुआ है = Goddess Lakshmi is embracing Him | hugging Him from the left.

विभूतिभिरुपाश्रितम् – विभूतिभि: (अलौकिक वैभव, ऐश्वर्य) + **उपाश्रितम्** (इनके ऊपर आश्रित हैं) - अलौकिक ऐश्वर्य और सम्पदायें इनके ऊपर आश्रित हैं, अर्थात् उनको प्रदान करने वाले यही हैं = Divine opulence and luxuries are dependent upon Him, that is, He has the power to bestow them.

भावार्थ – अब जब हम नरसिंह देव पर गहराई से ध्यान कर रहे हैं, यह श्लोक हमें उनकी एक विस्तृत छवि दिखा रहा है। यह हमें उनके मुख को एक सिंह की भांति खुला हुआ बता रहा है। दो नेत्रों के अलावा, यह श्लोक इस बात पर भी ज़ोर देता है कि उनका तीसरा नेत्र (आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक), यद्यपि अदृश्य है, फिर भी सक्रिय है। उनका मुख उज्ज्वल, किंतु कोमल प्रकाश से प्रदीप्त है, जिससे नरसिंह देव की सौम्य छवि उभरकर आती है। परंतु सौम्य छवि क्यों? क्योंकि यह श्लोक हमें यह बताना चाहता है कि जब वे रक्षक रूप में नहीं होते, तो वे वैसे ही कोमल होते हैं जैसे भगवान विष्णु। इस प्रेममय और सौम्य रूप को और अधिक स्पष्ट करने के लिए श्लोक में माँ लक्ष्मी का उल्लेख किया गया है - जो प्रेमपूर्वक उनका आलिंगन कर रही हैं।और इस प्रेमपूर्ण रूप में, माँ लक्ष्मी के साथ, नरसिंह देव सभी दिव्य विभूतियों और समृद्धियों के दाता बन जाते हैं - हमारे प्यारे विष्णु जी की तरह...

Interpretation – As we meditate upon Lord Narasimha deeper, this verse is painting a more elaborate picture. It wants us to imagine His face with an open mouth, like a Lion. Apart from the two visible eyes, the verse is emphasizing that His Third Eye (symbol of His Spiritual power), though not visible, is very much active. Details like His face being radiant with a bright but soft light are included to bring out a gentle image of Lord Narasimha. Why a gentle image? Because the verse wants us to know that when He is not in His protector mode, He is just as gentle as the Lord Vishnu we all know. To bring out this gentle and loving image further, the verse brings in Goddess Lakshmi, Who is embracing Him lovingly. And in this gentle and loving mode with Goddess Lakshmi, Lord Narasimha is the giver of divine opulence and luxuries – just like the Lord Vishnu we all know and adore.

चतुर्भुजं कोमलाङ्गं स्वर्णकुण्डलशोभितम्।
श्रियासुशोभितोरस्कं रत्नकेयूरमुद्रितम्॥

चतुर्भुजं - चतुः + **भुजं** ((उनकी) चार भुजाएं हैं) **कोमलाङ्गं** – **कोमल** + **अङ्गम्** (उनका शरीर कोमल हैं (जैसे सिंह का होता है))**स्वर्णकुण्डलशोभितम्** – **स्वर्ण** + **कुण्डल** + **शोभितम्** ((उनके कानों में) सोने के कुण्डल शोभा दे रहे हैं) = He has four arms. His body is soft and tender (like a Lion). His golden earrings are looking very beautiful.

श्रियासुशोभितोरस्कं – **श्रिया** (माँ लक्ष्मी, समृद्धि, सुंदरता) + **सुशोभित** (सुशोभित (हो रही हैं)) + **उरस्कम्** ((उनके) सीने (पर)) = His chest is adorned with grand jewels denoting prosperity | He has Goddess Lakshmi at His chest, i.e. in His heart.

रत्नकेयूरमुद्रितम् - रत्न + **केयूर** (बाजूबंद) + **मुद्रितं** (छपा हुआ) - रत्नों से जड़े बाजूबंद (उनकी भुजा में) छपे हुए (लग रहे) हैं = Armelts studded with Jewels are suiting so well, as if they are imprinted on His arms. That is – they are an integral part of His arms.

भावार्थ – उनकी शोभा, उनका आकर्षण, उनकी दिव्य सुंदरता — इन सबका यहाँ विस्तार से वर्णन हो रहा है। रचनाकार श्री प्रह्लाद यहाँ एक प्रेम प्रेरित उड़ान भरते हैं, जब वे "श्रिया" के हृदय में स्थित होने को दोहरे अर्थ में प्रस्तुत करते हैं। एक ओर इसका अर्थ है कि, श्रिया, अर्थात् ऐश्वर्य, नरसिंह देव के वक्षस्थल पर विराजमान हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे कोई रत्न जड़ित हार पहन पहने हुए हैं, जिससे उनका राजसी तेज झलक रहा है। दूसरी ओर, एक अधिक काव्यात्मक अर्थ यह भी है कि श्रिया, जो माँ लक्ष्मी का ही एक नाम है, उनके हृदय को अपने प्रेम से अलंकृत कर रही हैं।

Interpretation – His elegance, His charm, His divine beauty is being elaborated here. The composer, Shri Prahlad, flies high with imagination here, leveraging on multiple meanings of the word "श्रिया" (Shriya). Shriya, meaning prosperity, adorning Lord Narasimha's chest indicates him wearing a Royal pendant, looking noble. A more poetic meaning can also be that Shriya, which is also a name for Goddess Lakshmi, adorns His heart with Her love.

तप्तकाञ्चनसङ्काशं पीतनिर्मलवाससम्।
इन्द्रादिसुरमौलिस्थस्फुरन्माणिक्यदीप्तिभिः॥

तप्तकाञ्चनसङ्काशं - **तप्त** (पिघले हुए) + **काञ्चन** (स्वर्ण) + **सम्** (के जैसी) + **काशं** ((उनकी) चमक (है)) = His radiance is like molten gold.

पीतनिर्मलवाससम् – **पीत** (पीले (और)) + **निर्मल** (शुद्ध, बिना किसी छींटे के) + **वाससम्** (वस्त्र (उन्होंने पहने हैं)) = He is dressed in spotless, yellow colored clothes.

इन्द्रादिसुरमौलिस्थस्फुरन्माणिक्यदीप्तिभिः – **इन्द्रादि** (इन्द्र आदि) + **सुर** (देवगण (के)) + **मौलि** (माथे (पर)) + **स्थ** (स्थित) + **स्फुरन्** (चमकती हुई) + **माणिक्य** (रूबी जैसा लाल रत्न) + **दीप्तिभिः** (के प्रकाश से (वे प्रकाशित हैं)) = (He is illuminated by) the radiance of the jewels situated at the forehead of Indra and other Gods.

भावार्थ – पहली पंक्ति तो सरल है — यह नरसिंह भगवान को तप्त काञ्चन (पिघले हुए सोने) के समान तेजस्वी और पीले निर्मल वस्त्रों में वर्णित करती है। लेकिन दूसरी पंक्ति में एक गहरा अर्थ छिपा है। दूसरी पंक्ति का शाब्दिक अर्थ है: "इन्द्र और अन्य देवताओं के मस्तक पर स्थित रत्नों की दीप्ति से (प्रकाशित)"। पर वास्तव में यह पंक्ति जिस चित्र की कल्पना करवा रही है, उसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि "मस्तक पर स्थित रत्न" यहाँ तीसरे नेत्र की, यानी आध्यात्मिक नेत्र की शक्ति का प्रतीक हैं। इसलिए इस पंक्ति का गूढ़ अर्थ यह है कि भगवान नरसिंह की आध्यात्मिक शक्ति इतनी महान है कि इन्द्र और अन्य देवताओं की आध्यात्मिक शक्तियाँ भी उनके चरणों में नतमस्तक हैं।

Interpretation – While the first line is clear, the second line has a deeper meaning. The first line simply describes Lord Narasimha as dressed in spotless, yellow-colored clothes, shining like molten gold. The second line literally means "illuminated by the radiance of jewels situated at the forehead of Indra and other Gods". But actually, this line is a creative visualization, with a meaning hidden within. "Jewels situated at the forehead" indicate the power of the Third eye – the Spiritual eye. Hence, what this line really means is, Lord Narasimha is revered by the Spiritual powers of Indra and the other Gods. This indicates the supremacy of His spiritual power over Indra and other Gods accompanying Indra

विराजितपदद्वन्द्वं शङ्खचक्रादिहेतिभिः।
गरुत्मता च विनयात् स्तूयमानं मुदान्वितम्॥

विराजितपदद्वन्द्वं – **विराजित** (सुशोभित (हो रहा है उनके)) + **पद** + **द्वन्द्वं** (चरणों का जोड़ा) **शङ्खचक्रादिहेतिभिः** – **शङ्ख** + **चक्र** + **आदि** + **हेतिभिः** (अस्त्र – शस्त्र (अर्थात् उन्होंने शंख, चक्र और अन्य अस्त्र शस्त्र हाथ में लिए हुए हैं)) = His feet are looking adorned. He is holding a Conch, Chakra (a disc with sharp spikes) and other weapons.

गरुत्मता ((इनके प्यारे साथी) श्री गरुड़ के द्वारा) **च विनयात्** (विनयपूर्वक) **स्तूयमानं** (स्तूय अर्थात प्रशंसा; स्तूयमान अर्थात प्रशन्सित हो रहे हैं) **मुदान्वितम्** – **मुदा** (प्रसन्नता) + **अन्वितम्** (के साथ) = He is Someone who is being politely praised by Shri Garud and is feeling Joyful (hearing Himself being praised by Shri Garud)

भावार्थ – पहली पंक्ति हमें नरसिंह भगवान के राजसी रूप की कल्पना कराती है — उनके हाथों में उनके दिव्य आयुध (शंख, चक्र आदि) सुशोभित हैं और उनके चरण सुंदरता से अलंकृत हैं। चरणों का अलग से वर्णन करना एक काव्यात्मक शैली है जिससे भगवान का दिव्य स्वरुप अनुभव किया जा सकता है। दूसरी पंक्ति व्याकरण की दृष्टि से थोड़ी जटिल है, लेकिन इसके पीछे एक विशेष उद्देश्य है। भगवान नरसिंह अपने प्रिय सहचर श्री गरुड़ से गहरा लगाव रखते हैं। इस भाव को प्रकट करने के लिए यहाँ "गरुत्मता" शब्द का प्रयोग किया गया है। तकनीकी दृष्टि से यह शब्द "गरुत्मत द्वारा" या "जो गरुड़ के साथ हैं" इस अर्थ में नरसिंह भगवान के लिए प्रयुक्त होता है। किंतु भक्तिपूर्ण एवं काव्यात्मक प्रयोग में "गरुत्मत" स्वयं गरुड़ जी का भी नाम बन जाता है — यह दर्शाने के लिए कि नरसिंह भगवान और गरुड़ जी एक-दूसरे से कितने जुड़े हुए हैं। आगे, इस पंक्ति में नरसिंह भगवान को एक ऐसे देवता के रूप में वर्णित किया गया है जो श्री गरुड़ द्वारा विनम्र भाव से की जा रही स्तुति को सुन रहे हैं, और उस स्तुति को सुनकर आनंदित हो रहे हैं। मानो रचनाकार हमें नरसिंह भगवान को श्री गरुड़ की दृष्टि से देखने के लिए आमंत्रित कर रहे हों। इसका उद्देश्य भगवान और उनके साथी के बीच के गहन प्रेम और आत्मीयता को उजागर करना है।

Interpretation – The first line is making us imagine Lord Narasimha in His full glory by mentioning His feet. He is holding His weapons and accessories, and His feet are adorned. Praising the feet of a Deity is a poetic way to experience the Deity's divinity. The second line is structured a bit complex in terms of the grammar, but with a reason. Lord Narasimha is inseparable from His dear companion Shri Garud. The word गरुत्मता (Garutmataa) is specifically used to highlight this bond. Technically, this word means - "by Garutmat" or "by the one who is with Garuda" – that is Lord Narasimha Himself. However, in poetic and devotional usage, Garutmat is often used as a name for Shri Garuda Himself – highlighting that the two are inseparable. Further, in this line, Lord Narasimha is described as Someone who is being praised by Shri Garud, and who is feeling Joyful listening to His praise. It is as if the composer wants us to see Lord Narasimha through the eyes of Shri Garud. The objective of doing this is to highlight the deep love and connection between the Lord and His inseparable companion.

स्वहृत्कमलसंवासं कृत्वा तु कवचं पठेत्।
नृसिंहो मे शिरः पातु लोकरक्षात्मसंभवः॥

स्वहृत्कमलसंवासं - **स्व** (अपने) + **हृत्कमल** (हृदय रूपी कमल में) + **संवासं** ((नरसिंह देव) का वास) **कृत्वा** (कर के)... = Establishing Lord Narasimha in our lotus – like heart...

...**तु** (फिर) **कवचं** (इस कवच का) **पठेत्** (पाठ करना चाहिए) = ...(After doing so) we should chant this Kavach.

नृसिंहो (नरसिंह देव) **मे** (मेरे) **शिरः** (सिर) **पातु** (की रक्षा करें) = May my head be protected by Lord Narasimha...

लोकरक्षात्मसंभवः – **लोकरक्षा** (लोगों की । (इस) लोक की रक्षा के लिए) + **आत्मसंभवः** ((जिन्होंने) स्वयं को संभव किया)) = ... The One who made Himself possible (i.e. took a form) only to protect people and this particular realm.

भावार्थ – इस श्लोक के साथ कवच की संरचना रूप लेने लगती है। अब से, जैसा आप देखेंगे, हमारे शरीर के किसी विशेष अंग का उल्लेख होगा, और नरसिंह भगवान की कृपा का उस अंग के लिए आव्हान किया जाएगा। इस प्रकार के कवच को अंग-न्यास युक्त कवच कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – सुरक्षा पाने के लिए, हम एक-एक करके भगवान को अपने शरीर के प्रत्येक अंग से जोड़ते हैं। इसका उद्देश्य यह है कि सुरक्षा अत्यंत सटीक हो और यह सुरक्षा हमारे शरीर के माध्यम से हमारे समस्त अस्तित्व – शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक – के साथ एकरूप हो जाए।

स्वाभाविक रूप से, इतनी गहन प्रक्रिया प्रारंभ करने से पहले सही भावना का होना आवश्यक है। यही इस श्लोक की पहली पंक्ति का मर्म है। यह हमें अपने हृदय को एक सुंदर कमल के रूप में कल्पना करने को कहती है, जिसमें हम स्नेहपूर्वक अपने नरसिंह देव को विराजित करें। ये प्रेम और भक्ति इस प्रक्रिया की सफलता के लिए आवश्यक हैं।

दूसरी पंक्ति में, हम नरसिंह देव से हमारे सिर की रक्षा करने का निवेदन करते हैं। हमारा सिर हमारे विचारों का प्रतीक है। इसलिए सिर को नरसिंह भगवान से जोड़ने के लिए हम इस बात की प्रशंसा करते हैं उन्होंने यह नरसिंह रूप सिर्फ रक्षा के उद्देश्य से धारण किया था। लेकिन रक्षा किसकी? यहाँ रचनाकार ने संस्कृत शब्द "लोक" के दो अलग अलग अर्थों का सुन्दर प्रयोग किया है – "लोक" का अर्थ जनता (लोग) भी है और यह लोक, अर्थात पृथ्वी लोक भी!

Interpretation – With this verse, the Kavach's structure starts taking form. From here on, as you will see, a particular part of our body will be mentioned, and Lord Narasimha's grace will be called upon to protect that body part. This format of Kavach is called "Anga – Nyasa Yukt Kavach". In this format, to be protected, we connect the Lord with our body, one body part at a time. The intention is that the protection is precise, and through our physical body, the protection is integrated with all forms of our existence – physical, mental and spiritual.

Quite naturally, before such an intense process is initiated, we need to have the right emotion in place. This is what the first line takes us to. It asks us to imagine our heart as a beautiful lotus, in which we lovingly have our Lord Narasimha reside. These emotions of love and devotion are necessary pre-conditions for this process to be successful.

In the second line, we urge Lord Narasimha to protect our head. Our head symbolizes our thoughts. Hence, to connect Lord Narasimha with our head, we praise Him as Someone who took the Narasimha incarnation with the sole purpose of protecting. Protecting whom? This is where the composer has very poetically used dual meaning of the word "Lok" – which in Sanskrit means "People", as well as "Realm".

सर्वगोऽपि स्तम्भवासः भालं मे रक्षतु ध्वनिम्।
नृसिंहो मे दृशौ पातु सोमसूर्याग्निलोचनः॥

सर्वगोऽपि – **सर्वगः** (जो सर्वत्र व्याप्त हैं) + **अपि** (और) **स्तम्भवासः** - **स्तम्भ** (खम्भे (के अंदर)) + **वासः**(रहने वाले (भी हैं)) = The One Who is everywhere around, and even inside a pillar...

भालं (माथा) **मे** (मेरे) **रक्षतु** (रक्षा करें) **ध्वनिम्** (ध्वनि की) – (वे) मेरे मस्तक की (और) ध्वनि की रक्षा करें = ... May He protect my forehead (and) the Sound.

नृसिंहो (नरसिंह देव) + **मे** (मेरी) + **दृशौ** (दोनों आँखों (की)) + **पातु** (रक्षा करें) सोमसूर्याग्निलोचनः - **सोम** (चन्द्रमा) + सूर्य + **अग्नि** + **लोचनः** (नेत्र) = May Narasimh Dev, The One Whose own eyes are like the (Placid) Moon & the (Fiery Sun), protect my eyes.

भावार्थ – "जो सर्वत्र विद्यमान हैं और स्तंभ में भी" — पहली पंक्ति के पहले भाग को इस प्रकार क्यों कहा गया है? यह इसलिए कि हम वह क्षण याद करें जब नरसिंह भगवान प्रकट हुए थे। उस क्षण से ठीक पहले, हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को चुनौती दे रहा था — "तुम कहते हो कि विष्णु हर जगह हैं। तो क्या वे इस खम्भे में भी हैं?" जब प्रह्लाद ने हाँ में उत्तर दिया, तो हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद की बात को असत्य सिद्ध करने के लिए उस खम्भे को तोड़ दिया। परन्तु हुआ ठीक उल्टा - जैसे ही वह खम्भा टूटा, नरसिंह भगवान उसमें से प्रकट हो गए। प्रह्लाद की बात सत्य सिद्ध हुई।

पहली पंक्ति का दूसरा भाग बहुत गहरा अर्थ रखता है। हम नरसिंह भगवान से अपने माथे (भाल) की रक्षा की प्रार्थना कर रहे हैं, जो स्वाभाविक है — क्योंकि इससे पहले वाले श्लोक में हमने सिर की रक्षा की बात की थी - अब अगला अंग माथा ही है। परंतु यहाँ "ध्वनि" की बात क्यों आई है? यह “ध्वनि” शब्द थोड़े रहस्यमयी रूप से रखा गया है, क्योंकि इसका संबंध हमारे माथे में स्थित विशेष अंग – तीसरे नेत्र से है। यह अद्भुत अंग, हमारा तीसरा नेत्र, हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अंग कंपनों के माध्यम से कार्य करता है — जो मूलतः ध्वनि तरंगें ही होती हैं।अतः यहाँ माथे के साथ साथ ध्वनि का उल्लेख करके हम नरसिंह भगवान से हमारी आध्यात्मिक यात्रा की रक्षा की भी प्रार्थना कर रहे हैं।

दूसरी पंक्ति में हम नरसिंह भगवान से - जो स्वयं शीतल चंद्रमा और अग्निस्वरूप सूर्य जैसे नेत्रों वाले हैं - अपनी आँखों की रक्षा की प्रार्थना कर रहे हैं। यहाँ चंद्रमा उनके करुणामय और पोषणकारी स्वभाव का प्रतीक है, जबकि प्रज्वलित सूर्य उनकी तेजस्विता और संतुलित उग्रता को दर्शाता है। इस प्रकार, "शरीर के अंग को नरसिंह भगवान के किसी विशेष स्वरूप या गुण से जोड़ना" — यह क्रम आने वाले श्लोकों में भी बना रहेगा।

Interpretation – He who is present everywhere AND also in the pillar - why is this part of the first line worded the way it is? This is because it wants us to recollect the EXACT moment when Lord Narasimha appeared. Just before this moment, Hiranyakashipu was challenging Prahlad, saying - "You say Lord Vishnu is everywhere. Does that mean He is in this pillar also?" When Prahlad answered in affirmative, Hiranyakashipu broke the pillar to prove Prahlad wrong. But this act ended up proving Prahlad right! As soon as the pillar broke, Lord Narasimha emerged out of it!

The second part of the first line has a deep meaning. We are requesting Lord Narasimha to protect our forehead, which is understandable - forehead is the next body part after head, which we covered in the previous verse. But what's with the “sound”? This "sound" is mentioned in a slightly enigmatic way; because it is related to what our forehead CONTAINS - the Third eye! And this amazing organ, the Third eye, which is integral to our spiritual progress, works through vibrations - which are basically Sound Waves. Hence, by mentioning “Sound” along with the forehead, we want Lord Narasimha to protect our Spiritual Progress.

In the 2nd line, we request protection for our eyes from Lord Narasimha - One whose own eyes are like the calming Moon and the Fiery Sun. While the Moon denotes His compassionate and nurturing abilities, the Fiery Sun denotes His radiance and balanced ferocity. This “connecting a body part with an aspect of the Lord” will be a pattern in all the forthcoming verses.

कर्णौ मे पातु नृहरिः मुनिवर्यस्तुतिप्रियः।
नासां मे सिंहनासास्तु मुखं लक्ष्मीमुखप्रियः॥

कर्णौ मे (मेरे कानों (की)) **पातु** (रक्षा) **नृहरिः** (नृहरि अर्थात् नरसिम्हा (करें)) = May Lord Nrahari (Narasimha) protect my ears...

मुनिवर्यस्तुतिप्रियः – **मुनिवर्य** ((श्रेष्ठ) मुनियों के गण) + **स्तुति** ((के द्वारा की गयी) प्रशंसा) + **प्रियः** ((जिन्हें) प्रिय है) = (...who is) The one who loves to listen to His praise from Great Sages.

नासां (नाक) **मे** (मेरी) **सिंहनासास्तु** – **सिंहनासः** (सिंह की नाक) + **अस्तु** (है) – मेरी नाक (की रक्षा वे करें जिनकी) नाक सिंह की नाक है = (And may) my nose (be protected by the One) Who has a Lion's nose.

मुखं ((मेरे) मुख (की रक्षा वे करें)) **लक्ष्मीमुखप्रियः** (जिनका अपना मुख माँ लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय है) = (And may) my mouth (be protected by The one whose) own mouth is very dear to Goddess Lakshmi.

भावार्थ –इस श्लोक में एक एक अंग के लिए रक्षा का क्रम आगे बढ़ रहा है — कान, नाक और मुख की रक्षा यहाँ मांगी गयी है (कृपया ध्यान दें — यहाँ मुख की बात हो रही है, चेहरे की नहीं। चेहरा अगले श्लोक में आएगा)। जब हम अपने कानों की रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं, तब नरसिंह भगवान का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि "वे जिन्हें अपनी स्तुति सुनना प्रिय है"— जो उनके स्वयं के कानों की ओर संकेत करता है।मुख की रक्षा मांगते समय, उनके मुख को माँ लक्ष्मी के प्रिय रूप में वर्णित किया गया है — यहाँ मुख उनके वचनों का प्रतिनिधित्व करता है, और साथ ही माँ लक्ष्मी और नरसिंह भगवान के बीच आत्मीय प्रेम का भी अप्रत्यक्ष संकेत देता है।

यहाँ प्रयोग हुआ "नृहरि" नाम विचार करने योग्य है। यद्यपि यह विचार सीधे इस श्लोक से जुड़ा नहीं है, परंतु नामों के अर्थ में ईश्वर के गुण छुपे होते हैं। नरसिंह भगवान को "नृहरि" क्यों कहा जाता है? "हरि" का अर्थ होता है "हर लेने वाला"। भगवान विष्णु को "हरि" कहा जाता है, क्योंकि वे हमारे दुःख, पीड़ा और चिंताओं को हर लेते हैं।"नृहरि" शब्द "नृ" (मनुष्य) और "हरि" (हरने वाला) का योग है। तो यह संयोजन नरसिंह भगवान से कैसे संबंधित है? इसका एक अर्थ हो सकता है — "जो मनुष्य स्वरूप हैं और हरि (अर्थात् विष्णु) भी हैं"। यहाँ सिंह का रूप विष्णु के साथ एकरूप हो जाता है। या फिर इसका अर्थ हो सकता है — "जो मनुष्य के पापों, दुःखों या बुरे कर्मों को हर लेते हैं"। अपने नरसिंह अवतार में भगवान ने प्रह्लाद के दुःख तो हरे ही, हिरण्यकशिपु के पापों का भी अंत कर दिया। तीसरा दृष्टिकोण यह है कि किसी देवता के हाथों मृत्यु भी मोक्ष का एक माध्यम है! इस संदर्भ में, "नृहरि" का एक अर्थ यह भी हो सकता है - "जो मनुष्य के जीवन को हर के (याने उसका अंत कर के) उसे मुक्ति प्रदान करते हैं"।

Interpretation – We go further with asking for His step-by-step protection for our body parts - covering ears, nose and mouth in this verse. While requesting protection for our ears, Lord Narasimha is described as someone who Himself loves to listen to His praise – an indirect reference to His own ears. His mouth is described as being Dear to Goddess Lakshmi. Here, mouth is representative of what He says, and also as an indirect reference towards the intimate love between Goddess Lakshmi and Him.

A side reference to the name "Nrahari" – not directly related to the verse but worth pondering upon. Why is Lord Narasimha called "Nrahari"? The details behind this name, Nrahari, which has become synonymous with Lord Narasimha, are interesting. "Hari" means someone who "takes away". Lord Vishnu is called Hari very frequently, where the connotation is – someone who "takes away" our worries, our sorrows, our pain. Nrahari is a combination of Hari with the word Nra - which means "Human". So, how does the combination of these two words relate to Lord Narasimha? It can either mean someone who is a Man AND Hari i.e. Vishnu, where the Lion form is synonymous with Lord Vishnu. OR it can mean - the One who takes away a person's (sorrows/karmas/bad deeds). In His Narasimha form, He took away the sorrows of Prahlad AND bad deeds of Hiranyakashipu by ending his life. And a third perspective is – dying in the hands of a deity is also a way to emancipation! In this context, Nrahari may also mean – One who takes away a man's life (and grants emancipation).

सर्वविद्याधिपः पातु नृसिंहो रसनां मम।
वक्त्रं पात्विन्दुवदनः सदा प्रह्लादवन्दितः॥

सर्वविद्याधिपः – **सर्व** (सारी) + **विद्या** (विद्याओं के) + **अधिपः** (स्वामी, अधिपति) **पातु नृसिंहो** (नरसिंह देव रक्षा करें) **रसनां मम** (मेरी जिव्हा की) = May the One Who is the Lord of all knowledge protect my tongue.

वक्त्रं ((मेरे) चेहरे (की)) **पात्विन्दुवदनः** - **पातु** (रक्षा करें) + **इन्दु** (चन्द्रमा (जैसे)) + **वदनः** (चेहरे (के स्वामी)) **सदा प्रह्लादवन्दितः** (जो सदा श्री प्रह्लाद के वंदनीय हैं) = May my face be protected by the One whose Own face is like the Moon - He Who is always praised and adored by Shri Prahlad.

भावार्थ – नरसिंह भगवान के रूप में श्री विष्णु — हमारे जगत के पालनहार! वे हमारे संसार को पूरी तरह जानते हैं। इसीलिए इस श्लोक में उन्हें सारी विद्याओं का स्वामी कहा गया है। और कितना उपयुक्त नाम है यह, जब हम अपनी जिव्हा की रक्षा के लिए उनसे प्रार्थना कर रहे हैं। जिव्हा — शरीर का वह अंग, जो बोलने के लिए आवश्यक है। विद्या अधिकतर बोल के ही तो सीखी और सिखाई जाती है...

इसके पश्चात, हम उनके द्वारा अपने चेहरे की रक्षा की कामना करते हैं। और बिल्कुल स्वाभाविक रूप से, भगवान का स्वयं का मुख मंडल वर्णित होता है। उनके चेहरे की तुलना चन्द्रमा से की गई है — क्यों? क्योंकि वे केवल दुष्टों के लिए उग्र हैं। जो उनसे प्रेम करते हैं, जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं — उनके लिए नरसिंहभगवान उतने ही कोमल, करुणामय और पोषक हैं, जैसे शीतल चंद्रमा।

जैसा कि पहले श्लोक में उल्लेखित है, यह कवच प्रह्लाद जी द्वारा रचित है। नरसिंह भगवान के चेहरे का वर्णन करते हुए प्रह्लाद जी का प्रेम बढ़ रहा है, यह उनके शब्दों से पता चलता है। इस प्रेम की तीव्रता के कारण ही उन्होंने इस श्लोक में भगवान को यह नाम दिया है — "सदा प्रह्लाद द्वारा वंदनीय — जिनकी स्तुति प्रह्लाद सदा करता आया है और करता रहेगा !"

I**nterpretation** – Lord Narasimha is Lord Vishnu - the Guardian of our world! He knows our world inside out. And hence, He is being called the “Lord of all knowledge” in this verse. And what a choice of name when His protection is being requested for our tongue – the part of our body integral for speaking. Knowledge is best imparted by speaking, right...

Thereafter, we call for His protection for our face. And very naturally, His own face is described. Described by comparing to the Moon – Why? Because He is ferocious ONLY for the Evil. For those who love Him and walk the right path – He is as Kind, Compassionate and Nurturing as the Moon.
As mentioned in the first verse, this Kavach has been composed by Shri Prahlad. And very understandably, while describing the Lord’s face, Shri Prahlad’s Love for the Lord is gettimg more intense. This is why Shri Prahlad has given Him the name – “ The One who is always praised and adored by me (Shri Prahlad)! ”

नृसिंहः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ भूभरणान्तकृत्।
दिव्यास्त्रशोभितभुजो नृसिंहः पातु मे भुजौ॥

नृसिंहः पातु मे कण्ठं (नरसिंह देव मेरे कण्ठ की रक्षा करें) **स्कन्धौ** ((और मेरे) कन्धों (की रक्षा वे करें)) **भूभरणान्तकृत** – **भू** (धरती) + **भरण** (बोझ) + **अंत** + **कृत** ((जिन्होंने धरती के भार (अर्थात हिरण्यकशिपु) का अंत किया) = May Lord Narasimha protect by throat; and may The One who took away the Earth's burden (by killing Hiranyakashipu) protect my shoulders.

दिव्यास्त्रशोभितभुजो – **दिव्यास्त्र** + **शोभित** + **भुजो** (जिनकी भुजाओं में दिव्य अस्त्र शोभा देते हैं) **नृसिंहः पातु मे भुजौ** ((ऐसे)) नरसिंह देव मेरी भुजाओं की रक्षा करें) = May my arms be protected by The One whose own arms are adorned by Divine weapons.

भावार्थ – अब हम अपने कंठ (गले) की रक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। और इसके बाद हम अपने कंधों की ओर ध्यान केंद्रित करते हैं — शरीर का वह अंग जो बोझ उठाने में सहायक होता है। यहाँ नरसिंह भगवान से संबंध बहुत सुंदर रूप से जोड़ा गया है। उनका वर्णन ऐसी शक्ति के रूप में किया गया है जिन्होंने हिरण्यकशिपु का वध करके पृथ्वी का बोझ उतार दिया। हमारी धरती माता धैर्यपूर्वक हमारा भार वहन करती हैं। जब तक हम धर्म के मार्ग पर चलते हैं, तब तक हम माता के लिए "बोझ" नहीं होते। लेकिन जब कोई व्यक्ति अधर्म की ओर मुड़ता है, तो वह धरती के लिए बोझ बन जाता है। धरती, माँ होने के नाते, ऐसे अधर्मी लोगों को भी सहन करती रहती हैं — और ऐसे में माँ को उस बोझ से मुक्त करना एक दायित्व बन जाता है। इसलिए, हमारी धरती से गहरा प्रेम रखने वाले भगवान विष्णु, नरसिंह भगवान के रूप में अवतरित हुए और धरती को उस बोझ से मुक्त किया।
श्लोक की दूसरी पंक्ति नरसिंह भगवान के योद्धा स्वरुप को सामने लाती है, जहाँ उनके भुजाओं को दिव्यास्त्रों से शोभायमान बताया गया है। हिरण्यकशिपु के साथ उनका घमासान युद्ध हुआ था। हिरण्यकशिपु की पूरी सेना नरसिंह भगवान से युद्ध करने आ गयी थी। नरसिंह भगवान ने अकेले ही उन सभी को अपने दिव्य अस्त्रों- शस्त्रों से पराजित किया था।
अब एक जिज्ञासा यह है, कि नरसिंह भगवान के परम शस्त्र, उनके नखों का, इस श्लोक में व इस स्तोत्र में कहीं सीधा उल्लेख नहीं है. क्यों? शायद इसलिए क्योंकि यह स्तोत्र हमारे शरीर के विभिन्न अंगों की रक्षा की कामना हेतु रचा गया है, और नाखून तकनीकी रूप से शरीर के "जीवित अंग" नहीं माने जाते। या संभवतः इसलिए कि यहाँ अस्त्रों - शस्त्रों की चर्चा हो रही है, और नरसिंह भगवान के नखों की सबसे विशेष बात ही यही थी कि उनमें अत्यंत मारक क्षमता होते हुए भी तकनीकी रूप से वे 'अस्त्र या शस्त्र' नहीं थे। तभी नरसिंह भगवान उनके प्रयोग से हिरण्यकशिपु का वध कर सके। जैसा कि हम जानते हैं, हिरण्यकशिपु ने अपने जीवन की रक्षा के लिए कई वरदान प्राप्त किए थे। उन में से एक यह भी था कि — "कोई भी अस्त्र या शस्त्र मुझे मार न सके।"

Interpretation – Next, we ask for His divine protection for our Throat. And after throat, we focus on shoulders – the parts of our body which support us in carrying a burden. Here, the connection to Lord Narasimha is beautifully established by describing Him as someone who took away the Earth's burden. Our Mother Earth supports us silently. Till we are walking the good path, we are not a burden for Her. But when someone turns towards Evil, he becomes a burden. Earth, being the Mother, still tolerates such evil doers. Hence, someone needs to free Her of the burden. This is where Lord Vishnu, driven by his deep love for our Earth, took the form of Lord Narasimha, and took away Her burden.
The second line, while requesting protection for our arms, brings out Lord Narasimha's warrior form by describing His arms adorned with weapons. His battle with Hiranyakashipu was an elaborate one. Hiranyakashipu's entire army came in to fight with Lord Narasimha, Who defeated all of them singlehandedly using His divine weapons. At this point, one tends to think – Lord Narasimha's ultimate weapon – His fingernails, do not have a direct mention here, or anywhere in the Kavach. Why? The reason is unclear. Maybe because the purpose of the Kavach is to ask for protection for our body parts, and fingernails are TECHNICALLY speaking not a "living" body part. Or possibly because we are discussing weapons here, and the most unique feature of Lord Narasimha's fingernails was the fact that despite being deadly in impact, technically speaking they were NOT "weapons". Which is why Lord Narasimha could use them to kill Hiranyakashipu. As is known to us, of the multiple boons that Hiranyakashipu had received to save his life, one was "No weapon should be able to kill me."

करौ मे देववरदो नृसिंहः पातु सर्वतः।
हृदयं योगिसाध्यश्च निवासं पातु मे हरिः॥

करौ मे (मेरे दोनों हाथों (की)) **देववरदो** (देवताओं को वरदान देने वाले) **नृसिंहः** (नरसिंह देव) **पातु सर्वतः** (सभी ओर से | सभी तरह से रक्षा करें) = May Lord Narasimha, who bestows boons to the Gods, protect my hands from all directions | in all ways.
हृदयं ((मेरे) हृदय की) **योगिसाध्यश्च** – **योगिसाध्यः** (योगियों के द्वारा ही पाए जाने वाले) + **च** (और) **निवासं** ((उनके साथ) रहने वाले) **पातु मे हरिः** (हरि अर्थात नरसिम्हारूपी श्री विष्णु रक्षा करें) = May my Heart be protected by Hari (In Lord Narasimha's Form) – One Who can be accessed only by Yogis (spiritually inclined people) and Who stays with those who gain His access.

भावार्थ - पहली पंक्ति में हम अपने हाथों की रक्षा की प्रार्थना कर रहे हैं। नरसिंह भगवान से हाथों का संबंध इस तरह जोड़ा गया है कि वे वो देवता हैं जो अपने हाथों से अमूल्य आशीर्वाद प्रदान करते हैं – इतने अमूल्य कि अन्य देवता भी उन आशीर्वादों की कामना करते हैं। एक और बात - हमारे हाथ हमारे कर्मों का प्रतीक हैं। इसलिए यह आग्रह किया गया है कि सभी दिशाओं से और हर प्रकार से हमारी रक्षा की जाए। सारांश यही कि हम जो भी करें, उसमें नरसिंह भगवान की कृपा और सुरक्षा प्राप्त हो।

दूसरी पंक्ति व्याकरण की दृष्टि से थोड़ी जटिल है, परंतु भावना को ही अर्थ का आधार बनाइए। यहाँ हृदय की रक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना की गई है - यह बात स्पष्ट है। आगे भगवान का वर्णन इस रूप में किया गया है कि उन्हें केवल योगी (आध्यात्मिक साधना में स्थित व्यक्ति) ही प्राप्त कर सकता है, और भगवान ऐसे योगी के साथ निवास करते हैं। जब आप भगवान को एक योगी के रूप में अनुभव करते हैं, तो वे कहाँ निवास करते हैं? आपके हृदय में 😊। तो कुल मिलाकर अर्थ बनता है — मेरा हृदय (नरसिंह रुपी) भगवान हरि द्वारा रक्षित हो, जो योग द्वारा प्राप्त होते हैं और योगी के हृदय में ही निवास करते हैं।

यह क्यों कहा गया है कि केवल योगी ही उन्हें प्राप्त कर सकते हैं? क्योंकि भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार में उनसे जुड़ने के लिए प्रयास करना पड़ता है। एक ओर उनकी उग्रता और दूसरी ओर किसी शरणागत के लिए उनका गहन प्रेम — इन दोनों के बीच संतुलन बनाने में एक भक्त को समय लग सकता है।

Interpretation – In the first line, we are requesting protection for our Hands. Connection to Lord Narasimha is made by describing Him as a Deity who uses His hands in bestowing His precious blessings – so precious that even other Gods seek them. Our hands also represent our actions, our Karma. Hence, there is an emphasis on protecting us from all directions in all ways. The intention is that we receive Lord Narasimha's protection in "all that we do".

The second line is structured a bit complex grammatically, but let the emotion drive the meaning. The Lord's protection is being asked for our Heart; this is very clear. Further, the Lord is being described as The One who can be accessed only by a Yogi (spiritually inclined person), and who lives with a Yogi.

When we access the Lord as a Yogi, where does the Lord stay? In our Heart 😊 So, the overall meaning of the line becomes – May my Heart be protected by Lord Hari (in His Narasimha form) – the One who can be accessed by a Yogi and who stays in that Yogi's heart.

Why is it emphasized that only Yogis can access Him? This is because Lord Vishnu in His Narasimha form is one degree difficult to connect to, as generally seen. There is a stark contrast between His ferocity on one hand and His deep love and care for someone seeking protection on the other. Relating to this contrast may take a while...

मध्यं पातु हिरण्याक्षवक्षःकुक्षिविदारणः।
नाभिं मे पातु नृहरिः स्वनाभिब्रह्मसंस्तुतः॥

मध्यं (मेरे मध्य भाग | धड़ की) **पातु** (रक्षा (वे करें जिन्होंने)) **हिरण्याक्ष** (हिरण्यकशिपु का भाई, जो विष्णु जी के वराह अवतार के हाथों मारा गया था) + **वक्षः** ((के) सीने (और))+ **कुक्षि** (पेट (को)) + **विदारणः** (फाड़ दिया था) = May my torso be protected by The One who tore the chest and belly of Hiranyaksh (Hiranyakashipu's brother who was slayed by Lord Vishnu in His Varaha (Wild Boar) Avatar)

नाभिं मे (मेरी नाभि) **पातु** ((की) रक्षा) **नृहरिः** ((वे) नर के रूप में हरि (करें)) **स्वनाभि** ((जो) अपनी ही नाभि से उत्पन्न हुए) **ब्रह्मसंस्तुतः** (ब्रह्माजी द्वारा संस्तुत हैं, अर्थात् ब्रह्माजी द्वारा उनकी गहरी, भावपूर्ण प्रशंसा की गयी है) = May my navel be protected by Lord Nrahari – the Human form of Lord Vishnu (the same Lord Vishnu who is) praised deeply by Lord Brahma - a Divine being born from His own navel.

भावार्थ - जो उग्रता पिछले श्लोक में व्यक्त की गई थी, वह इस श्लोक में स्पष्ट रूप से सामने आती है। रचनाकार ने नरसिंह अवतार से ठीक पहले के विष्णु अवतार – वराह (जंगलीसूअर) अवतार - का संदर्भ दिया है।इस अवतार में भगवान विष्णु ने हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष का वध किया था, जो पृथ्वी तत्व को नष्ट करने के उद्देश्य से उसे आदिम समुद्र में ले गया था।
इस पंक्ति में भी शरीर के एक अंग की सुरक्षा मांगते समय उसे भगवान के किसी रूप या कर्म से जोड़ा गया है। चूंकि इस पंक्ति में धड़ (कंठ से लेकर नाभि तक) की रक्षा मांगी जा रहीहै, इसलिए रचनाकार ने भगवान विष्णु द्वारा हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु के वध से संबंध स्थापित किया है। इन दोनों भाइयों के धड़को चीर कर उनका वध किया गया था। हिरण्यकशिपु के वध की यह विधि तो अत्यंत स्पष्ट रूप से नरसिंह अवतार की कथा में वर्णित है — उन्होंने अपने नखों से हिरण्यकशिपु का पेट फाड़ डाला था। हिरण्याक्ष के वध के विवरण में यह बात उतनी स्पष्ट नहीं है। परंतु चूंकि वराह देव के मुख्य शस्त्र उनके दांत थे, यह मानना उचित होगा कि उन्होंने भी अपने विरोधी के धड़ को फाड़कर ही उसका अंत किया होगा। इस श्लोक में हिरण्यकशिपु का नाम नहीं लिया गया है। लेकिन हम मान सकते हैं की जब बात ही नरसिंह देव की हो रही है, तो हिरण्यकशिपु का वध भी रचनाकार के मन में होगा ही।
श्लोक की दूसरी पंक्ति में, जहाँ नाभि कीसु रक्षा मांगी जा रहीहै, रचनाकार बहुत सुंदरता से ब्रह्माजी के जन्म का उल्लेख लाते हैं।नाभि सृष्टि का प्रतीक है; इसे हमारे सूक्ष्म शरीर का आध्यात्मिक केंद्र और स्थूल शरीर का प्राणिक केंद्र माना जाताहै। भगवान विष्णु की नाभि से ब्रह्माजी का जन्म — अर्थात सृष्टि के निर्माता का निर्माण हुआ। ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्मा जी के जन्म लेते ही, उनका पहला कार्य था — अपने सृजनकर्ता, भगवान विष्णु की स्तुति करना। इस दृष्टि से देखा जाए तो ब्रह्मा जी की पहली "सृष्टि" ये स्तुति ही थी।यही भाव इस पंक्तिमें सुंदरता से लाया गया है।

Interpretation – The ferocity mentioned in the previous verse is brought out in this one. The composer has brought in the reference of the Vishnu Avatar just preceding Narasimha – Varaaha (Wild Boar). In this avatar, Lord Vishnu had slain Hiranyakashipu's brother, Hiranyaksh, who had tried to destroy the Earth element by taking it into a primordial ocean. The pattern of co-relating a particular body part with the Lord continues here too. And since we are asking protection for our torso, composer has drawn co-relation with Lord Vishnu's manner of slaying the 2 brothers, Hiranyaksh and Hiranyakashipu – by tearing apart their torso. This aspect is very clearly detailed for Hiranyakashipu's slaying by Lord Narasimha – He had torn Hiranyakshipu's torso with His nails. The manner is not mentioned as explicitly for Hiranyaksh. But one can assume that with tusks as the primary weapon, tearing opponent's torso must have been an obvious choice for Lord Varaaha. Hiranyakashipu is not mentioned explicitly in the verse. But we can assume that since Lord Narasimha is the point of focus all through, Hiranyakashipu's slaying also must have been in the mind of the composer.

In the second line, where our navel is being focused upon, composer very beautifully brings out the reference to birth of Lord Brahma. Navel represents creation; is considered the spiritual center of our subtle body and the Praanic (Energy) center of our physical body. Parallel is drawn with Lord Vishnu creating the creator, Lord Brahma, through His navel. It is said that as soon as Lord Brahma was born, the first action He did was to praise His creator, Lord Vishnu. In a way, that praise was Lord Brahma's "first creation". This aspect has been highlighted in this line.

ब्रह्माण्डकोटयः कट्यां यस्यासौ पातु मे कटिम्।
गुह्यं मे पातु गुह्यानां मन्त्राणां गुह्यरूपधृत्॥

ब्रह्माण्डकोटयः – **ब्रह्माण्ड** + **कोटयः** (करोड़ों ब्रह्माण्ड) **कट्यां** (कमर में) **यस्यासौ** - **यस्य** (जिनकी (उपस्थित हैं)) + **असौ** - (ऐसे पुरुष (नरसिंह देव)) **पातु मे कटिम्** (मेरी कमर की रक्षा करें) = May my waist be protected by The One who has millions of universes on His waist.

गुह्यं मे पातु (मेरे गुप्तांगों की रक्षा (वे) करें (जो)) **गुह्यानां मन्त्राणां** (गुप्त और रहस्यमय मंत्रों का) **गुह्यरूपधृत्** (गुप्त और रहस्यमय रूप धारण करते हैं) = May my private parts be protected by The One who takes the mysterious Form of mysterious Mantras (chants).

भावार्थ - पहली पंक्ति नरसिंह भगवान के विराट रूप को अत्यंत सुंदरता से प्रस्तुत कर रही है। अपने इस विराट स्वरुप में नरसिंह भगवान रूपी भगवान विष्णु वे हैं जिनमें सब कुछ स्थित हैं। जो कुछ भी इस सृष्टि में है, जो कुछ भी प्रकट होता है – वह सब उनके ही विराटरूप का अंश है। काव्यात्मक रूप से इसे ऐसे कहा गया है मानो वे ब्रह्मांडों को अपनी कमर पर आभूषण की तरह धारण करते हैं। वे सारे ब्रह्मांड उन्हें शोभा देते हैं, वे ब्रह्मांड उन्हीं के हैं।

दूसरी पंक्ति गूढ़ और रहस्यमयी है।यह पंक्ति भगवान नरसिंह के तांत्रिक पक्ष को प्रकट करतीहै। इसमें शरीर के गुप्त अंगों की रक्षा का आह्वान किया गया है – और इन गुप्त अंगों का संबंध रहस्यमयी आध्यात्मिकता से जोड़ा गया है। गुप्तांग यौन ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं, और तांत्रिक दर्शन के अनुसार, यौन ऊर्जा का प्रयोगआध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाना चाहिए। ऐसा कहा गया है कि हमारी यौन ऊर्जा और कुंडलिनी ऊर्जा – जो कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा है – आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं। साथ ही, हम जानते हैं कि मंत्र इस ऊर्जास्रोत को जागृत करने का माध्यम हैं।मंत्र कैसे कार्य करते हैं, यह एक जटिल विज्ञान है। लेकिन सरल रूप में समझें, तो मंत्र एक विशिष्ट "कंपन – आकार"उत्पन्न करते हैं (जो भावना + विचार + ऊर्जा से बनता है)। यह "कंपन – आकार" उन विशिष्ट देवता के "कंपन – आकार"सेजुड़जाता है जिनका वो मंत्र है। दूसरे शब्दों में, जो मंत्र हम जपते हैं उसका "कंपन – आकार" हमारे लिए उन देवता के स्वरूप को आकार देता है (ऊर्जा और तरंग के स्तर पर)। तभी वह देवता हमारे ऊपर, हमारे भीतर कार्य करते हैं। इसीलिए इस पंक्ति में नरसिंह भगवान को "गूढ़ मंत्रों के रहस्यमयी स्वरूप को धारण करने वाले" कहा गया है।

Interpretation – The 1st line brings out the Grand form of Lord Narasimha. In His Grand form, Lord Vishnu, represented here in His Narasimha form, is the all-encompassing form of all forms. All that is present, all that manifests, is a subset of this form. Described poetically, it is like He wears universes on His waist like an ornament. They adorn Him, they belong to Him.

The second line is esoteric and mysterious. This line brings out the Tantric aspect of Lord Narasimha. Protection for private parts is being asked for – and the connection of private parts with Esoteric Spirituality has been brought out. Private parts represent sexual energy. As per Tantric philosophy, it is desirable to direct sexual energy towards Spiritual progress. It is said that sexual energy and Kundalini energy, that is Cosmic energy, are deeply inter-connected. Moreover, we know that Mantras, that is chants, are a way to discover this connection; a means to unlock this energy source. How do these Mantras work - this is a complex science. But in a nutshell, Mantras create a vibrational pattern (through emotions + thought waves + energy) which matches with a specific deity's vibrational pattern. In other words, the vibrational pattern of the Mantra chanted by us takes theform of that deity at an energy and vibrational level. This is how that deity's characteristics works on us and through us. Which is why, in this line, Lord Narasimha is described as "The One who takes or embodies the mysterious forms of mysterious Mantras."

ऊरू मनोभवः पातु जानुनी नररूपधृत्।
जङ्घे पातु धराभारहर्ता योऽसौ नृकेसरी॥

ऊरू ((मेरी) जांघों (की)) **मनोभवः** - **मनः** + **भवः** (जो (अपने) मन से उत्पन्न हुए हैं) **पातु** ((वे) रक्षा करें) **जानुनी** ((और मेरे) घुटनों (की रक्षा वे करें जिन्होंने)) **नररूपधृत्** ((देवता होते हुए) नर का रूप लिया) = May my thighs be protected by The One who incarnated out of His own will. May my knees be protected by The One who (being a deity) took a Man's form.

जङ्घे ((मेरी) पिंडलियों (घुटने और पाँव | चरण के बीच का भाग)) **पातु** (कीरक्षा वे करें जो (यह "जो" श्लोक में में बाद में लिखा गया है - यः शब्द का अर्थ)) **धरा** + **भार** + **हर्ता** (धरती का भार हर लेने वाले हैं) **योऽसौ** – **यः** (जो) + **असौ** (वही) **नृ** (नर) **केसरी** (सिंह) = May my calves be protected by The One, THAT one, who took away the Earth's burden.

भावार्थ - अलग अलग अंगों की रक्षा मांगने की प्रक्रिया अंत की ओर अग्रसर है। इस श्लोक में जाँघों, घुटनों और पिंडलियों का उल्लेख है, जिनसे मिल के हमारा संपूर्ण निचला शरीर बनता है (पैरों को छोड़ कर - पैरों की रक्षा अगले श्लोक में है)। इन तीन अंगों के माध्यम से हम खड़े होते हैं — न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि किसी के समर्थन में खड़े होने के अर्थ में भी। यही अंग हमें गति प्रदान करते हैं और हमें कार्यों की ओर ले जाते हैं। इसीलिए इन तीन अंगों को सम्मिलित रूप से शरीर का निचला हिस्सा मानते हुए नरसिंह देव की कथा के इन तीन भागों से जोड़ के देखा जा सकता है –

(1) जब भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार लेने का मन में संकल्प लिया (मनोभवः - जो अपने मन से उत्पन्न हुए हैं)।
(2) जब उस संकल्प को क्रिया में बदलते हुए उन्होंने नर रूप धारण किया (नररूपधृत् - नर का रूप लिया)।
(3) जब उन्होंने उस नर एवं सिंह के सम्मिलित रूप में हिरण्यकशिपु का वध करके पृथ्वी का भार दूर किया (धराभारहर्ता - धरती का भार हर लेने वाले)।

यहाँ किसी अंग को किसी भाग से न जोड़ कर, भगवान नृसिंह की कथा के इन तीन भागों को हमारे निचले शरीर से जुड़ा देखना एक बेहतर भावार्थ है।
"योऽसौ" (यः + असौ) शब्द का प्रयोग विशेष ध्यान देने योग्य है। 'यः' का अर्थ है "जो", और 'असौ' का अर्थ है "वह या वही"। इस शब्द के माध्यम से श्री प्रह्लाद की गहन भक्ति और भावनात्मक आवेग प्रकट होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जब वे इस श्लोक की रचना कर रहे थे, तब नरसिंह भगवान की लीला के तीनों भागों को याद करते हुए उनके अंदर उर्जा की एक लहर उमड़ रही थी। इसलिए योऽसौ के माध्यम से मानो वे ज़ोर देते हुए कह रहे हैं - नरसिंह देव, वही नरसिंह देव जो मेरे अपने हैं, जो मेरे लिए आए थे, जिन्होंने मुझे बचाया!"

Interpretation – We are reaching the final stages of the process of asking protection for our body parts one by one. We cover thighs, knees and calves in this verse. These 3 parts cover almost the entire lower body (except feet, covered in the next verse). This is how the poetic connection with Lord Narasimha can be explained. Our lower body enables us to stand (physically as well as standing for someone). It makes us go to things, makes us mobile, makes us DO and accomplish things beyond out immediate reach. And hence, this verse connects these 3 parts of our lower body with (1) Lord Vishnu deciding to take the incarnation as Lord Narasimha (2) Translating the will into action by assuming the form of a human and (3) Removing the burden of the Earth by killing Hiranyakashipu. Rather than a part-by-part correlation, seeing an overall correlation of Lord Narasimha's story in 3 these broad steps with 3 major parts of our lower body is a better way to interpret this verse.

The use of योऽसौ - यः (The One) + असौ (THAT one) – deserves an explanation here. Since the entire story of Lord Narasimha is depicted here in 3 broad steps, it feels like the composer, Shri Prahlad, is experiencing a surge of energy while composing this verse. Hence, he is referring to Lord Narasimha in a highly emphatic, almost euphoric way. He is using extra words to indicate that The One, THAT one (who is very, very close to my heart, who came for me, stood by me, protected me) THAT entity, Lord Narasimha is being referred to here.

सुरराज्यप्रदः पातु पादौ मे नृहरीश्वरः।
सहस्रशीर्षा पुरुषः पातु मे सर्वशस्तनुम्॥

सुरराज्यप्रदः – **सुर** (देवताओं (को)) + **राज्य** + **प्रदः** (देने वाले) **पातु पादौ मेनृहरीश्वरः** (नृहरि मेरे पैरों की रक्षा करें) = May the One who bestows Kingdom to the Gods protect my feet.

सहस्रशीर्षा – **सहस्र** (हज़ारों) + **शीर्षा** (सिरोंवाले) **पुरुषः** (पुरुष, अर्थात् नरसिंह देव)) **पातु मे** (रक्षा करें) **सर्वशस्तनुम्** – **सर्वशः** (सभी तरह से) + **तनुं** ((मेरे) शरीर की (पहले लिखे "मे" अर्थात् "मेरे" का उपयोग यहाँ हुआ है)) = May Lord Narasimha, who has a Thousand heads, protect my body in all ways and means possible.

भावार्थ - यहाँ हम अपने अंतिम अंग — पैरों — की रक्षा की प्रार्थना कर रहे हैं। नरसिंह भगवान को इस श्लोक में "देवताओं को राज्य देने वाले" के रूप में वर्णित किया गया है। ऐसा क्यों? आइए इसे थोड़ी गहराई से समझते हैं। कहा जाता है कि किन्हीं देवता के शरीर को जब भक्त की दृष्टि से देखा जाता है तो सबसे महत्वपूर्ण स्थान उन देवता के चरणों का होता है। यही वह स्थान है जहाँ से कृपा प्रवाहित होती है। (इसलिए भारतीय परंपरा में हम सम्मान व्यक्त करने के लिए चरण स्पर्श करते हैं।) और यदि हम नरसिंह भगवान जैसे परम देवता के चरणों से प्रवाहित होने वाली कृपा की बात करें, तो वह कोई साधारण कृपा नहीं है। ये वह कृपा है जो देवताओं को राज्य प्रदान करती है!

श्लोक की दूसरी पंक्ति में नरसिंह भगवान को "सहस्र सिरों वाला पुरुष" कहा गया है। यह उनकी संपूर्ण ब्रह्मांड को समाहित करने वाली छवि है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में, पूरा ब्रह्मांड एक विराट पुरुष के रूप में कल्पित किया गया है। यहाँ नरसिंह भगवान को उसी रूप में दर्शाया गया है। श्री विष्णु देव के विश्वावतार के समान। नरसिंह देव को "सहस्र सिरों वाला" कहना न केवल उनकी विराटता और सर्वव्यापकता को दर्शाता है, बल्कि कवच के रक्षण भाव को भी सुदृढ़ करता है। जिस दिशा में नरसिंह देव का मुख है, जिस दिशा पर उनकी दृष्टि है — उस दिशा से कोई भी नकारात्मक शक्ति, कोई भी विपत्ति, कोई भी दुष्टता हम पर आक्रमण नहीं कर सकती । अतः हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि उनके मुख सभी दिशाओं की तरफ दृष्टि करें, जिससे हम हर प्रकार से सुरक्षित रह सकें।यह भी स्मरण रहे — हम केवल यह शारीरिक शरीर नहीं हैं। एक मानसिक शरीर, एक आध्यात्मिक शरीर, और एक कार्मिक शरीर भी हमारा भाग है। यह श्लोक नरसिंह भगवान से इन सभी शरीरों की रक्षा की प्रार्थना है।

इसी के साथ, शरीर के अंगों की रक्षा का खंड समाप्त होता है। अब हम कवच के अंत की ओर अग्रसर हैं, जहाँ दिशाओं के लिए सुरक्षा मांगी जायेगी।

Interpretation – We ask for protection of our final body part here – feet. Lord Narasimha is referred to as someone granting Kingdoms to the Gods. Why? It is said that feet are the most important part of a deity's image. Feet is where the grace flows from. (Which is why in India tradition, we touch the feet of someone we respect) And if we are talking about the grace flowing from the feet of someone like Lord Narasimha, it is no ordinary grace. It is the grace which provides Kingdom to the Gods!

The second line brings out Lord Narasimha as the "Cosmic Man" – the spiritual tradition of representing the whole universe as a Single Entity. To bring out this aspect of Lord Narasimha encompassing the whole cosmos, He is described as someone with a thousand heads. This also enhances the protection aspect of the Kavach. A direction where Lord Narasimha is facing – well, no evil can dare come from that direction! So, we request Him to face in all possible directions with his thousand faces – so that we are protected in all possible ways. Let us not forget - we are not just this PHYSICAL body. We are also made of a mental body, a spiritual body and a karmic body. The intention is to seek Lord Narasimha's protection for all of these.

With this verse, we conclude this part-by-part protection of our body. We will now move to the final stages, where the directions will be safeguarded using Lord Narasimha's grace.

पूर्व (East)

दक्षिण – पूर्व (आग्नेय)
(South - East)

दक्षिण (South)

दक्षिण – पश्चिम (नैऋत्य)
(South - West)

महोग्रः पूर्वतः पातु महावीराग्रजोऽग्नितः।
महाविष्णुर्दक्षिणे तु महाज्वालस्तु नैऋत्ये॥

महोग्रः - **महा** + **उग्रः** **पूर्वतः** (पूर्व से) **पातु** (रक्षा करें) **महावीराग्रजोऽग्नितः** – **महावीर** (श्री हनुमान) + **अग्रज** ((के) बड़े भाई) + **अग्नितः** (अग्नि, अर्थात् दक्षिण-पूर्व दिशा (से रक्षा करें)) = May Lord Narasimha in His extremely ferocious form protect me from the East, and let Him as

महाविष्णुर्दक्षिणे - **महा** + **विष्णुः** (श्री विष्णु का सार, उनके दर्शन से परे का स्वरुप) + **दक्षिणे तु** (दक्षिण में (रहें)) **महाज्वालस्तु** – **महाज्वालः** (महाज्वाल - नरसिंह देव का परम तेजस्वी और विनाशक स्वरुप) + **तु नैऋत्ये** (नैऋत्य – दक्षिण - पश्चिम दिशा (में रहें)). “तु” शब्द दो बार प्रयोग हुआ है - "जहाँ दक्षिण में महाविष्णु तो वहीं दक्षिण - पश्चिम में महाज्वाल" का काव्यात्मक भाव देने के लिए = May Lord Narasimha as the Supreme Essence of Lord Vishnu be in the South, and at the same time, Him in His Blazing, Destructive Fire form be in the South – West.

भावार्थ - हम अब नृसिंह भगवान से आठों प्रमुख दिशाओं को सुरक्षित करने की प्रार्थना कर रहे हैं। इनमें से पूर्व, आग्नेय, दक्षिण और नैऋत्य दिशाएं इस श्लोक का भाग हैं। हर दिशा के लिए भगवान नृसिंह के भिन्न नामों का आह्वान किया गया है। दो नाम अधिक गहराई से समझने जैसे हैं -

(1) भगवान हनुमान के बड़े भाई (दक्षिण – पूर्व (आग्नेय)) – यह नाम इन दोनों अत्यंत ऊर्जावान और रक्षक देवताओं के बीच एक अटूट संबंध को स्थापित करता है।

(2) भगवान विष्णु के परम तत्त्व (दक्षिण) – भगवान विष्णु - हमारे जगत, हमारे लोक के पालनहार! और दक्षिण दिशा, जो मृत्यु और न्याय की दिशा मानी जाती है।उस दिशा के लिए इस नाम का चयन किया जाना अत्यंत अर्थपूर्ण है...

कृपया चित्रों को त्रि-आयाम (3D) रूप में देखें, जिसमें वे युवक और युवती हमारे प्रतीक हैं। मान के चलें कि उनका मुख पूर्व दिशा की ओर है। पूर्व से गोल घूमते हुए इन चार दिशाओं में श्री नरसिंह के रूपों को दर्शाया गया है।

Interpretation – We now request Him to safeguard the 8 main directions. This verse covers East, South-East, South and South-West. Different names of Lord Narasimha are invoked to seek protection for each direction. Particularly interesting names to note are

(1) Lord Hanuman’s elder brother (South-East). This clearly establishes a direct linkage between these two highly energetic, protector Deities

(2) Supreme Essence of Lord Vishnu (South) – Highlights Lord Vishnu’s role as the keeper of our world, our realm. And to take this name for South, which is the direction of death and justice, is just deep...

Please interpret the images as a three-dimensional representation, with the man and the lady symbolizing all of us. Please assume their face is towards East. From there, we go clockwise to represent Lord Narasimha in these 4 directions.

उत्तर (North)

उत्तर – पश्चिम (वायव्य)
(North – West)

पश्चिम (West)

पश्चिमे पातु सर्वेशो दिशि मे सर्वतोमुखः।
नृसिंहः पातु वायव्यां सौम्यां भीषणविग्रहः॥

पश्चिमे (पश्चिममें (रहकर)) **पातु** ((मेरी) रक्षा करें) **सर्वेशो - सर्व** (सभी (के)) + **ईशो** (ईश्वर, स्वामी) **दिशि मे सर्वतोमुखः** (वो जिनका सभी दिशाओं की तरफ मुख है) = In the West, let me be protected by the Lord of Everything | everyone – the One who has His face in all directions.

नृसिंहः पातु (नरसिंह देव रक्षा करें) **वायव्यां** (वायव्य अर्थात् उत्तर - पश्चिम से) **सौम्यां** ((और) सौम्य अर्थात् उत्तर दिशा से (रक्षा करें)) **भीषण** (भयानक) **विग्रहः** (रुप) - वे जिनका रुप भीषण है = May Lord Narasimha protect me from the North – West; and from the North, May the One who has a terrifying form (Lord Narasimha again) protect me.

भावार्थ - हम दिशाओं के अनुसार रक्षण को आगे बढ़ाते हैं। क्रम में अगली दिशा है — पश्चिम। यहाँ के लिए नरसिंह भगवान को "सर्वेश" कहा गया है — अर्थात् सभी के और "सब कुछ" के स्वामी (यह नाम सुन कर मुझे ऐसी अनुभूति होती है जैसे नरसिंह भगवान और महादेव एक ही हैं), और सर्वतोमुखः — जो सभी दिशाओं की ओर मुख किए रहते हैं, यानी हर दिशा पर दृष्टि बनाए रखते हैं। याद कीजिए, सोलहवें श्लोक में हमने उन्हें सहस्रमुख (हज़ार मुखों वाले) कहा था, और अपने शरीर की सभी प्रकार से रक्षा उनके द्वारा चाही थी।अब इस श्लोक में हम उनसे आग्रह कर रहे हैं कि वे हर दिशा में स्थित होकर हमारी रक्षा करें। ये है इस कवच की दृढ़ता — यह सटीक, सम्पूर्ण, और सर्वांगीण सुरक्षा प्रदान करता है।

पश्चिम के बाद हम भगवान नरसिंह से उत्तर-पश्चिम दिशा (वायव्य) को रक्षित करने की प्रार्थना करते हैं। इस दिशा को वायव्य कहा जाता है, क्योंकि ये वायु देव की दिशा मानी जाती है। इसके बाद रचनाकार एक रोचक विरोधाभास प्रस्तुत करते हैं, उत्तर दिशा के लिए। वे उत्तर दिशा के "सौम्य" नाम का प्रयोग करते हैं। यह नाम सोम अर्थात् चंद्रमा से जुड़ा हुआ है, जो इस दिशा की शांत प्रकृति को दर्शाता है। परंतु उसी दिशा के लिए रक्षा मांगते हुए वे नरसिंह भगवान को "भीषणविग्रहः" अर्थात् "भयानक रूप वाले" कह रहे हैं। ऐसा क्यों? इसलिए कि संकट तो सौम्य दिशा से भी आ ही सकता है! और सौम्य दिशा से आने वाला संकट अधिक चोट करता है, क्योंकि हमें उसका अंदेशा नहीं होता। इसलिए नरसिंह भगवान से ये प्रार्थना कि इस अप्रत्याशित संकट से रक्षा के लिए वे अपने भीषण रूप में उपस्थित रहें।

Interpretation – We continue with the direction wise protection. West is the next direction. We address Lord Narasimha as the Lord of everything & everyone (something which makes me feel Him converging with Mahadev), who faces every direction; i.e. keeps a watch on all directions. Let's recall - in the 16th verse, we had addressed Him as someone with a thousand faces, asking for His protection for our body in all ways & means possible. And in this verse, we are asking Him to be in all the directions and keep a watch for us. This is the efficacy of this Kavach - it provides precise, thorough & wholesome protection.

After west, we ask Lord Narasimha to protect us from the North – West, also called Vaayavya - belonging to Vayu, the God of Wind. And then, the composer brings out an interesting contrast for the North direction. He calls the North direction by the name "Soumya" – which relates to "Som" - the Moon and its calm nature. And then he addresses Lord Narasimha as "The One with a terrifying form" to call upon His protection for this direction. The intention? Threats can come from milder sources also. And such threats hurt more because they are unexpected in nature. Hence, the request to Lord Narasimha that He should be present in His terrifying form for such threats.

उत्तर पूर्व (ईशान्य)
(North – East)

ईशान्यां पातु भद्रो मे सर्वमङ्गलदायकः।
संसारभयदः पातु मृत्योर्मृत्युर्नृकेसरी॥

ईशान्यां – (ईशान्य दिशा में) **पातु** ((मेरी) रक्षा करें) **भद्रो** (वे जो भद्र (कल्याणकारी) हैं (और)) **मे सर्वमङ्गलदायकः** – सर्व (हर प्रकार का) + **मङ्गल** (मंगल (अर्थात शुभ) फल) + **दायकः** (देते हैं) = From the North East, may the One who brings welfare and auspiciousness protect me.

संसारभयदः – **संसार** + **भय** (संसार में रहने से जुड़े सभी प्रकार के भय) + **दः** (हरने वाले (नरसिंह देव) वैसे "दः" का मतलब देने वाला होता है, परन्तु संस्कृत काव्य शैली में इसका अर्थ विपरीत माना जाता है) **पातु** (मेरी (सांसारिक भयों से) रक्षा करें) **मृत्योर्मृत्युर्नृकेसरी** - **मृत्योः** + **मृत्युः** + **नृ** (नर) + **केसरी** (सिंह) ((ऐसे) नरसिंह देव जो मृत्यु की भी मृत्यु हैं) = May The One who takes away all the fears of life (and existence) protect me from these fears; since He is the Half Lion Half Man who is death for death itself.

भावार्थ - पहली पंक्ति के साथ हम क्रम में बची अंतिम दिशा - ईशान्य के लिए रक्षा मांग रहे हैं। और यह पंक्ति एक रोचक बात उजागर करती है। उत्तर-पूर्व दिशा के लिए, नरसिंह भगवान का आवाहन एक अलग रूप लिए हुए है। यहाँ उनकी करुणा और सौम्यता को स्मरण किया गया है। इस बदलाव का कारण यह विशेष दिशा है। भारतीय शास्त्रों के अनुसार, ईशान्य दिशा (उत्तर-पूर्व) को अत्यंत शुभ और पवित्र माना गया है। यह स्वयं भगवान शिव की प्रिय दिशा मानी जाती है। इसीलिए इस दिशा में नरसिंह भगवान भी एक सौम्य रूप में सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं।

जहाँ पहली पंक्ति आठों दिशाओं की सुरक्षा को समापन दे रही है, वहीं इस श्लोक की दूसरी पंक्ति रक्षा को और भी आगे ले जा रही है। स्तोत्र को संपूर्ण रूप देते हुए, इस पंक्ति में हम संसार से, अस्तित्व से जुड़े सभी भयों से रक्षा की प्रार्थना कर रहे हैं। और इसीलिए, मृत्यु को संसार का सबसे बड़ा भय मानते हुए, यहाँ नरसिंह भगवान को ऐसे रूप में स्मरण किया गया है जो स्वयं मृत्यु के लिए मृत्यु हैं!

Interpretation – We conclude the direction wise protection with the first line of this verse. And this line brings out an interesting insight. For the North-East direction, Lord Narasimha's invocation changes. Here, His benevolence is described in full colors. The reason for change is this particular direction. As per Indian scriptures, North – East is considered a highly auspicious direction, very dear to Lord Shiva Himself. Hence, Lord Narasimha is also bringing protection in a benevolent form here.

While the first line concludes the direction wise protection, the second line of this verse is taking the scope of protection to another level. Making the Kavach absolotely thorough, this line asks for protection from ALL fears of worldly existence. And hence, assuming death as the biggest fear of existence, Lord Narasimha is referred to as the One Who is death for death itself!

इदं नृसिंहकवचं प्रह्लादमुखमण्डितम्।
भक्तिमान् यः पठेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

इदं (यह) **नृसिंहकवचं** (नरसिंह कवच) **प्रह्लादमुखमण्डितम्** – **प्रह्लाद** (श्री प्रह्लाद) + **मुख** ((के) मुख (से)) + **मण्डितम्** ((कहा गया है और शब्दों से अलंकृत किया गया है) = This Narasimha Kavach has been recited and decorated with words by Shri Prahlad.

भक्तिमान् ((श्री नरसिंह देव में) भक्ति रखने वाला) **यः** (जो (व्यक्ति)) **पठेन्नित्यं** – **पठेत्** + **नित्यं** ((इस कवच को) लगातार पढ़ता है (वह)) **सर्वपापैः** (सारे पापों से) **प्रमुच्यते** (मुक्त हो जाता है) = A person who recites this regularly becomes free from all negative Karmas.

भावार्थ - इस श्लोक के साथ, हम कवच के इस संस्करण के समापन से बस एक कदम दूर हैं। मूल कवच में इसके बाद दस और श्लोक आते हैं। ये दस श्लोक कवच का पाठ करने से प्राप्त होने वाले विविध लाभों के बारे में हैं। मैंने इन दस श्लोकों को इस संस्करण में शामिल नहीं किया है — अगले संस्करण में उन्हें भी जोड़ लेंगे। तब तक, हमारा नरसिंह देव के लिए प्रेम ही पर्याप्त हो इस संस्करण का पाठ करने और इसे आत्मसात करने के लिए! 😊

इन दस श्लोकों के बाद चार पंक्तियों वाला एक श्लोक आता है - इस कवच की अंतिम सीढ़ी, जो हम आगे पढ़ेंगे । ये चार पंक्तियाँ इस शक्तिशाली और प्रभावशाली रचना को एक अत्यंत ऊर्जावान, तीव्र और सशक्त समापन देती हैं। इस तरह का समापन भगवान नरसिंह के स्वभाव और व्यक्तित्व के बिल्कुल अनुरूप है। मैं जब भी इन पंक्तियों का उच्चारण करता हूँ, ऐसा महसूस होता है मानो उनकी ऊर्जा मेरी नसों में दौड़ रही हो! चलिए, उन चार पंक्तियों को समझते हैं...

Interpretation – With this verse, we are one step away from the end of this version of the Kavach. In the original Kavach, there are 10 more verses after this. They are about the various benefits one can have by regular recital of the Kavach. I am not including these 10 verses in this version; in the next version we will include them. Till then, let our Love for Lord Narasimha be sufficient to recite and internalize this version 😊

After the 10 verses mentioned above, a final verse of 4 lines comes, which is described ahead. These 4 lines are the final step – a high energy, high intensity conclusion of this powerful, potent creation. A conclusion like this goes very much in line with Lord Narasimha's personality and persona. I feel His energy rushing through my veins every time I recite these 4 lines! Let us go to them...

गर्जन्तं गर्जयन्तं निजभुजपटलम् स्फोटयन्तं हतन्तं।
दीप्यन्तं तापयन्तं दिवि भुवि दितिजं क्षेपयन्तं क्षिपन्तं।
क्रन्दन्तं रोषयन्तं दिशि दिशि सततं संहरन्तं भरन्तं।
वीक्षन्तं घूर्णयन्तं करणिकरशतैर्दिव्यसिंहं नमामि॥

(मैं नमन करता हूँ) **गर्जन्तं** (गर्जना करने वाले को) **गर्जयन्तं** (गर्जना करवाने वाले को) **निजभुजपटलम्** – **निज** (अपनी) + **भुज** + **पटलम्** (भुजाओं के समूह (से)) **स्फोटयन्तं** ((दुष्ट समूह में) विस्फोट करवाने वाले को) **हतन्तं** ((और ऐसा कर के दुष्टों पर) आघात करने वाले को | उनके प्राण लेने वाले को) = (I bow to the One) Who roars, Who makes others roar. Who, with His multiple hands, causes explosion (within the group of opponents| evil doers) (and by doing so) Who causes them grave injuries | loss of life.

(मैं नमन करता हूँ) **दीप्यन्तं** ((दुष्टों को) जलाने वाले को) **तापयन्तं** ((उन्हें) झुलसाने वाले को) **दिवि** (दिव्य लोकों में (या)) भुवि (धरती पर (स्थित)) **दितिजं** (माता दिति के पुत्र अर्थात दैत्य (ऐसे दैत्यों को)) **क्षेपयन्तं** (तितर बितर करवाने वाले को) **क्षिपन्तं** (उन्हें फेंक । पटक देने वाले को) = (I bow to the One) Who torches and burns the evil-doers. Whether the Sons of Mother Diti (Daityas – demons) are in divine realms or on the earth – (I bow to) the One Who makes them run helter-skelter and Who throws them here and there.

(मैं नमन करता हूँ) **क्रन्दन्तं** ((क्रोध से) चिल्लाने वाले को) **रोषयन्तं** ((दुष्टों को) क्रोध दिलाने वाले को) **दिशि दिशि** (अलग अलग दिशाओं में (जा कर)) **सततं** (लगातार) **संहरन्तं** ((दुष्टों का) संहार करने वाले को) **भरन्तं** ((और जिन्हें आवश्यकता है उन्हें) आपूर्ति करने वाले को | उनका भरण पोषण करने वाले को) = (I bow to the One) Who cries with anger, Who invokes anger in evil – doers (because He attacks them). (I bow to the One) Who goes from directions to directions, dimension to dimensions and eliminates evil – doers on one hand while nourishing those who need support on the other.

वीक्षन्तं (ध्यान से देखने वाले को) **घूर्णयन्तं** (घुमाने वाले को ((सम्मिलित अर्थ - घुमा घुमा के ब्रह्माण्ड के सारे ग्रहों और लोकों को देखने वाले को | उनका निरीक्षण करने वाले को)) **करणिकरशतैर्दिव्यसिंहं** – **करणि** (उपकरण, यन्त्र, औज़ार) + **कर** (हाथ) + **शतैः** (सौ (सम्मिलित अर्थ – अपने सौ हाथों को, उपकरणों की तरह, जैसी आवश्यकता पड़े वैसा प्रयोग करने वाले को) + **दिव्य** + **सिंहं** ((ऐसे) दिव्य सिंह (रुपी देवता) (को)) **नमामि** (मैं नमन करता हूँ) = The One Who inspects, Who (makes the planets and realms of the universe) rotate (combined meaning – who makes the planets and realms rotate & inspects them from all angles); The One Who uses His hundred hands like an instrument, as needed. To such a Divine Lion (Deity in the form of a Lion), I bow with respect and devotion.

भावार्थ - तेजस्वी कवच का तेजस्वी समापन! इसमें नरसिंह भगवान के उग्र रूप पर विशेष ज़ोर दिया गया है। उन्हें ऐसी शक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो नकारात्मक ऊर्जाओं को ढूंढ ढूंढ कर उन्हें समाप्त करना अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानते हैं। हालाँकि, इसी श्लोक में यह भी बताया गया है कि जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ वे अपने पोषणकारी और सहायक स्वरूप को भी प्रकट करते हैं। चौथी पंक्ति इस बहुआयामी स्वरूप को बहुत सुंदर ढंग से बता रही है। भगवान के हाथों को “उपकरण” कहा गया है। “उपकरण” का उपयोग आवश्यकता के अनुसार होता है। जहाँ पालन-पोषण की आवश्यकता हो, वहाँ ये हाथ स्नेह से सहायता करने में प्रयोग किये जाते हैं । लेकिन जहाँ विध्वंस की आवश्यकता हो, वहाँ यही हाथ दुष्ट का पेट चीर डालते हैं। यह पंक्ति उनके नखों पर भी ध्यान केंद्रित करती है – उनकी कथा का एक महत्त्वपूर्ण अंश जो पूरे कवच में अन्यत्र नहीं आया है। हिरण्यकशिपु के वध के लिए केवल नरसिंह भगवान के नख ही वह साधन थे जिनसे यह कार्य संभव था। हिरण्यकशिपु ने सभी शस्त्रों से अजेय होने का वर प्राप्त कर लिया था। परन्तु तकनीकी रूप से देखा जाए तो नाखून "शस्त्र" की श्रेणी में नहीं आते। इसीलिए नरसिंह देव ने हिरण्यकशिपु को मारने के लिए उनका सटीक उपयोग किया।

Interpretation – A fiery conclusion to the intense Kavach! Major focus is on Lord Narasimha’s ferocious nature. He is described as a power which literally hunts down and eliminates negative energies as a top priority. Having said so, the verse also mentions that He also shows His nourishing & supporting nature wherever needed. The 4th line brings out this versatility beautifully. The Lord’s hands are being called as “instruments” – used as per the need. Where nurturing is needed, these hands are used to care and nurture. But where destruction is needed, the same hands tear the evil – doer’s abdomen. This line also brings focus on Lord’s fingernails – a crucial detail not covered in the rest of the Kavach. In context of eliminating Hiranyakashipu, Lord’s nails were the only way to do the job. Hiranyakashipu had acquired immunity from all weapons. However, technically speaking, nails do not fall under the category of “weapons”. Which is why Lord Narasimha used them to kill Hiranyakashipu.

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे प्रह्लादोक्तम् नृसिंहकवचम् संपूर्णम् ॥

इस प्रकार,श्री ब्रह्माण्ड पुराण से लिए हुए, श्री प्रह्लाद द्वारा रचे हुए, नरसिंह कवच स्तोत्र का समापन हुआ।
Thus, we conclude the Narasimha Kavach, composed by Shri Prahlaad, and taken from the Brahmaand Puraan.